अन्तर्निरीक्षण विधि के दोष

Date : .....

मनोविज्ञान

Expt. No. ..... UNIT - III Page No. 05

Demerits of introspective - Method

(1) आत्मगत विधि (Subjective - Method) :-

अन्तर्निरीक्षण विधि के खिलाफ व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिक वाटसन (Watson) ने आरोप लगाया कि यह विधि आत्मगत है। उन्होंने कहा कि अपनी चेतन अनुभूति का अध्ययन खुद वह व्यक्ति करता है, कोई दूसरा व्यक्ति नहीं। अतः संभव है कि व्यक्ति अपने अनुभव का विवरण देते समय झूठ बोल दे और सही अनुभूति को छिपाकर गलत विवरण दे बैठे। ऐसी हालत में उसके द्वारा दिया गया विवरण गलत हो जाता है। इस प्रकार यह विधि अवैज्ञानिक बन जाती है।

(2) चंचल चेतना (fluctuating Consciousness) :-

अन्तः निरीक्षण विधि का एक दोष यह बतलाया जाता है कि इसके द्वारा जिस चेतन अनुभूति का अध्ययन किया जाता है, वह काफी चंचल होती है। इसलिए उसका ठीक - ठीक अध्ययन संभव नहीं हो पाता है। कारण यह है कि जब व्यक्ति अपने चेतन अनुभव का अध्ययन करने लगता है तो अपनी चंचलता के कारण वह अनुभव ही समाप्त हो जाता है। इसलिए अध्ययन विश्वसनीय नहीं हो पाता है।

(3) भाषा की असमर्थता (incompetency of Language) :-

इस विधि का एक दोष यह है कि अपने चेतन - अनुभवों का भाषा के रूप में व्यक्त करना आसान नहीं होता है।

Teacher's Signature : Dr. Gajendra Tiwari

होते हैं, और उनके कौन-कौन से गुण होते हैं, इस सारी बातों को समझना सचमुच बड़ा कठिन होता है।

(6) पुनरावृत्ति का अभाव (Lack of Repetition):- इस विधि की एक त्रुटि यह भी है कि इसमें पुनरावृत्ति का लक्षण नहीं पाया जाता है। जो कि वैज्ञानिक विधि के लिए आवश्यक है। इसका कारण यह है कि चेतन अनुभव चंचल तथा अस्थिर होता है। इसलिए उसे बार-बार उसी रूप में दुहराना संभव नहीं होता है। सच तो यह है कि चेतन-अनुभूति अपने वास्तविक अर्थ में केवल एक बार ही घटित होता है।

(7) प्रमाणीकरण का अभाव [Lack of Verification]:- वैज्ञानिक विधि की एक विशेषता प्रमाणीकरण है, जिसका अभाव अन्तःनिरीक्षण विधि में देखा जाता है। एक व्यक्ति में जो चेतन अनुभव देखा जाता है, या घटित होता है और जिसका विवरण वह देता है, उसी चेतन अनुभूति का अध्ययन उसी रूप में कोई दूसरा व्यक्ति करे यह संभव नहीं है। जैसे- गुलाब के फूल को देखने पर व्यक्ति अपने चेतन अनुभव को जो विवरण देता है, उसका जाँच कोई दूसरा व्यक्ति अपने चेतन-अनुभव के आधार पर करे, यह संभव नहीं है। अतः प्रमाणीकरण की विशेषता इस विधि में नहीं पाई जाती है।

(8) सीमित क्षेत्र (Limited Scope):-

अन्तःनिरीक्षण विधि का क्षेत्र काफी सीमित है। इसका उपयोग पशु, बच्चे तथा पागलों पर नहीं किया जा सकता है। पशु में भाषा का अभाव होता है, बच्चे में भाषा किसी विकसित नहीं होती, और पागलों में भाषा विकृत होती है। अतः उनके अनुभवों का अध्ययन इस विधि द्वारा संभव नहीं है। इसी तरह जो व्यक्ति सामान्य होते हैं, लेकिन जिनकी बुद्धि कम होती है, और जो अपने चेतन अनुभव को समझने में असमर्थ होते हैं, उनके लिए भी यह विधि उपयुक्त नहीं है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अन्तः निरीक्षण विधि के कई दोष हैं, जिनके कारण इसकी उपयोगिता सीमित हो गई है। विशेष रूप से व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिकों के कारण इस विधि पर आघात पहुँचा और इसके स्थान पर बाह्य-निरीक्षण विधि पर बल दिया जाने लगा। प्रकार्यवादी मनोवैज्ञानिकों ने कम-से-कम अन्तःनिरीक्षण के अस्तित्व को स्वीकार किया, लेकिन व्यवहारवादियों ने इसे स्वीकार नहीं किया। वर्तमान स्थिति यह है कि अन्तःनिरीक्षण विधि आज भी किसी-न-किसी उपनाम के साथ जीवित है।

Dr. Gajendra Tiwari
Department of Psychology
Govt. Degree College, Bagaha

Teacher's Signature : .....